आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 1 सितम्बर, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

77वें स्वाधीनता दिवस पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग द्वारा दिये गये उद्बोधन के अंश

स्वाधीनता दिवस के 77वें पर्व पर आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। आज का दिन पूरे देश में राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है क्योंकि यह दिन हमारे इतिहास में एक विशेष महत्व रखता है। स्वतंत्रता दिवस हमें याद दिलाता है कि हमारे देश की स्वतंत्रता के लिए हमारे वीर सपूत सेनानियों एवं पूर्वजों ने कितने बलिदान दिये थे। उन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व समर्पण कर हमें एक स्वतंत्र देश का उपहार दिलाया। आज उनके महान् बलिदान को याद करते हुए उन्हें श्रृद्धांजली अर्पित कर गौरवान्वित होने का दिन है। प्रदेश में पशुचिकित्सा शिक्षा, शोध एवं प्रसार का दायित्व हमारे कंधों पर है तथा हमारे समस्त कार्यकलापों का सीधा प्रभाव पशु कल्याण से जुड़ा है। अतः पशुचिकित्सा शिक्षा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में नवीन शोध, आविष्कारों, ज्ञानवर्धन व कौशल तकनीक हस्तांतरण कर हम प्रदेश की सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति एवं कल्याण में अपना योगदान देना होगा। विश्वविद्यालय की शिक्षा, शोध व प्रसार गतिविधियों का ही प्रभाव है कि पशुधन की संख्या राजस्थान में दूसरे स्थान पर होने पर भी राजस्थान भारतवर्ष में सर्वाधिक दुग्धोत्पादन करने वाला प्रदेश बन गया है तथा प्रदेश में प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता बढ़कर 1150 ग्राम हो गई है जबकि राष्ट्रीय औसत 450 ग्राम है। इस उपलब्धि के लिए आप सभी एवं प्रदेश के मेहनती किसान व पशुपालकों को मैं बधाई देता हूँ तथा विश्वास करता हूँ कि शीघ्र ही हम सर्वाधिक प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता कराने वाले पंजाब राज्य को पीछे छोड़ देंगे। मुझे यह बताते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय का भौगोलिक फैलाव निरंतर बढ़ रहा है। डेयरी तथा खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालयों की स्थापना के पश्चात् यह विश्वविद्यालय बहुसंकाय विश्वविद्यालय बन चुका है। अब इस दिशा में आगे बढ़ते हुए मत्स्यकी महाविद्यालय खोलने का प्रयास भी प्रारंभ कर दिया गया है। राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2023–24 की बजट घोषणा में राज्य में पशुचिकित्सा शिक्षा को और अधिक बढ़ावा देने के उद्देश्य से जोबनेर (जयपुर) में एक नये पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय तथा लालसोट (दौसा), सिरोही, सीकर व बस्सी (जयपुर) में एक एक नये पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय खोले जाने की घोषणा की है। इस प्रकार से राज्य में दो पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय तथा 12 संघटक वेटरनरी महाविद्यालय हो जायेंगे। ऐसा गौरव हासिल करने वाला राजस्थान देश का पहला प्रदेश बन गया है। राज्य सरकार की इस अनूठी पहल से राज्य के किसानों एवं पशुपालकों को पशुचिकित्सा सुविधा और अधिक सुलभ हो पायेगी तथा युवाओं को तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के अधिक अवसर प्राप्त होंगे। प्रदेश में महत्वपूर्ण प्रसार कार्यक्रमों से प्रभावित हो उन्हें और गति प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 2023–24 की बजट घोषणा के तहत जोजावर (पाली) में एक नवीन पशु विज्ञान केन्द्र की क्रियान्वित हेतु प्रशानिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्रदान की है निसंदेह इस नवीन पशुविज्ञान केन्द्र के माध्यम से उस क्षेत्र के पशुपालकों एवं किसानों को सीधा लाभ मिल पायेगा। पशुचिकित्सा के क्षैत्र में होम्योपैथी के उपयोग के दृष्टिगत होम्योपैथी विश्वविद्यालय, जयपुर से एक एम.ओ.यू. किया गया है। इससे पशु रोग निदान एवं चिकित्सा के क्षेत्र में इस नये दृष्टिकोण से पशुचिकित्सा शोध को नये आयाम हासिल होंगे। इसी वर्ष से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को अंगीकृत करते हुए छात्र हित में Multiple Entry तथा Exit व्यवस्था तक डिग्री पूर्ण करने की अधिकतम अवधि को बढ़ाने इत्यादि महत्वपूर्ण फैसले लिये गये हैं। हम सभी के लिए यह गौरव का क्षण है कि हम अगला एक वर्ष प्लेटिनम जुबली वर्ष के रूप में मना रहे हैं तथा इस महाविद्यालय में शिक्षण तथा शोध में गुणात्मक सुधार करते हुए इसे और अधिक गौरवशाली बनाने का सतत् प्रयास करेंगे।

मेरा विश्वास है कि खुली आँखों से देखे जाने वाले स्वप्न सदैव साकार होते हैं, अतः आगे बढ़ने की चाहत जगाईये। इसके लिए सतत् प्रयास पूरी संजीदगी से करें। जब तक उत्कृष्टता की चाहत नहीं होगी तब तक सफलता की कहानी लिखना संभव नहीं है। अतः आईये, हम सभी आज इस पुनीत अवसर पर अपने संस्थान तथा राष्ट्र को महान् बनाने का संकल्प लें और संकल्प–सिद्धी के लिए समर्पित भाव से आगे बढ़ें।

जय हिन्द!

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

प्रबंध मण्डल की 31वीं बैठक
डेयरी महाविद्यालयों हेतु 12 सहायक आचार्यों के चयन का हुआ अनुमोदन

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 31वीं प्रबंध मण्डल की बैठक 5 अगस्त को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित की गई। प्रबंध मण्डल ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक डेयरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और डेयरी एवं खाद्य प्रौद्यागिक महाविद्यालयों हेतु साक्षात्कार पश्चात् 12 पात्र सहायक आचार्य के परिणामों का अनुमोदन किया। बैठक में विश्वविद्यालय के अधीन सभी पशु अनुसंधान फार्मों पर सरप्लस एवं अनुपयोगी पशुओं का निलामी करने का भी अनुमोदन किया गया। बैठक में प्रबंन्ध मण्डल एवं अकादमिक परिषद् की गत बैठक की पालना रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया। विश्वविद्यालय की कुलसचिव बिन्दु खत्री ने बैठक में एजेण्डे प्रस्तुत किये। बैठक में प्रबंध मण्डल के माननीय सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत, प्रो. रूद्र प्रताप पाण्डे, डॉ. अमित नैन, प्रो. जे.बी. फोगाट, श्री अशोक मोदी, श्रीमती कृष्णा सोलंकी, श्री पुरखाराम डूडी, डॉ. विरेन्द्र नैत्रा, डॉ. दीवान सिंह, डॉ. एस.पी. जोशी, प्रो. ए.पी. सिंह, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया एवं श्री बी.एल. सर्वा उपस्थित रहे।

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा तिरंगा रैली का आयोजन

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष में वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 14 अगस्त को तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर 100 फीट झण्डा फहराने के बाद कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने तिरंगा रैली को रवाना किया। रैली को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि आजादी की अमृत महोत्सव के तहत सरकार द्वारा 13 अगस्त से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जिससे आमजन में राष्ट्र के प्रति सम्मान एवं देश भक्ति का भाव जागृत होगा। रैली विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार से रवाना होकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय सर्किल से वीर दुर्गादास सर्किल, एम.एन. हॉस्पिटल, तीर्थस्तंभ से होते हुए विश्वविद्यालय के सविधान पार्क पर समाप्त हुई।

कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने ध्वजारोहण कर दी सलामी
उत्कृष्ट कार्यों हेतु शिक्षकों एवं कर्मचारी हुए सम्मानित

देश के 77वें स्वाधीनता के अवसर पर कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने ध्वजारोहण कर सलामी दी। प्रो. गर्ग ने आजादी के अमर शहीदों, वीरों एवं देश की स्वाधीनता के लिए बलिदान देने वाले कर्मवीरों को याद किया एवं श्रद्धांजलि अर्जित की। इस अवसर पर कुलपति ने अपना सम्बोधन पढ़ा। इस अवसर पर शैक्षणिक, क्षेत्र के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए 15 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। समारोह में विश्वविद्यालय की प्रथम महिला श्रीमती मंजु गर्ग, डीन, डायरेक्टर्स सहित अधिकारीगण, शिक्षक और कर्मचारी उपस्थित रहे। स्वाधीनता दिवस के अवसर पर वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के परिसर में पौधारोपण किया गया। कुलपति प्रो. गर्ग ने बोटल पाम का पौधा लगाकर पौधारोपण कार्यक्रम की शुरूआत की।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

पशु टीकाकरण जागरूकता शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गांव गाढवाला में 14 अगस्त को अखिल भारतीय मारवाड़ी बकरी नस्ल सुधार परियोजना द्वारा एक दिवसीय टीकाकरण जागरूकता शिविर के आयोजन में परियोजना की प्रमुख अन्वेषक प्रो. उर्मिला पानू ने बताया कि शिविर के दौरान 25 पशुपालकों को खनिज लवण बाह्य–परजीवीनाशक दवा का वितरण किया गया तथा पशुओं में टीकाकरण के महत्व को विस्तार से समझाया गया व बकरियों में एन्टेरोटोक्सेमिया का टीकाकरण भी किया गया। शिविर में परियोजना के सह–प्रमुख अन्वेषक डॉ. विरेन्द्र कुमार, डॉ. प्रकाश, महावीर व मोहम्मद नसीम को सहयोग रहा।

बायोमेडिकल वेस्ट के उचित प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा 19 अगस्त को गाढ़वाला में जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि स्कूली विद्यार्थियों को पोस्टर एवं पेम्पलेट के माध्यम से पशुजैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन एवं निस्तारण का महत्व बताया तथा पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाले संक्रामक रोगों के बारे में जानकारी दी। डॉ. मनोहर सैन एवं डॉ. देवेंद्र चौधरी ने बायोमेडिकल वेस्ट के उचित निस्तारण की विधियों एवं प्रबन्धन के नियमों के बारे में बताया। कार्यक्रम में स्कूल की प्रधानाध्यापिका पुष्पा मेहता का सहयोग रहा।

कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 18 अगस्त को आयोजित कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि महात्मा गांधी माध्यमिक विद्यालय में स्कूली विद्यार्थियों को डॉ. मैना कुमारी ने कम्प्यूटर की आधारभूत जानकारी प्रदान करने के साथ साथ कम्प्यूटर की विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगिता एवं महत्व को विस्तृत रूप से बताया। डॉ. निर्मल सिंह राजावत ने कम्प्यूटर का प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया। विद्यालय की प्रधानाध्यापिका पुष्पा मेहता का कार्यक्रम आयोजन में सहयोग रहा।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–सितम्बर, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अलवर, बाड़मेर, चूरू, डूंगरपुर, गंगानगर, जयपुर, जैसलमेर, जालोर, जोधपुर, नागौर, पाली, उदयपुर
फेसिओलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	जोधपुर	–	–	–
खुरपका मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	उदयपुर			गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	–	–	–	बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, गंगानगर, हनुमानगढ़, जोधपुर, नागौर, प्रतापगढ़, सीकर, उदयपुर
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	अलवर, बारां	कोटा	–	भीलवाड़ा, बीकानेर, जयपुर, झालावाड़, नागौर, सवाईमाधोपुर
बकरी एवं भेड़ माता रोग	भेड़, बकरी	सीकर	–	–	–
तिबरसा	गाय, भैंस, ऊँट	प्रतापगढ़	बारां	कोटा	भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी
एफेमेरल फीवर	गाय, भैंस		बीकानेर, जोधपुर, गंगानगर	कोटा, झालावाड़, बूंदी, भीलवाड़ा, बारां, चित्तौड़गढ	राज्य के अधिकांश जिले

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं
डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 3, 4, 7, 8, 10, 14 एवं 16 अगस्त को गांव हरियासर, आसपालसर मुगलेरा, भोजरासर, बुकनसर बड़ा, खेजड़ा दिखनादा, हालासर एवं मालसर में तथा 5 अगस्त को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 180 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 5, 10, 16 एवं 28 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 26 अगस्त को गांव अमरपुरा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 194 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 7, 10, 16 एवं 21 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 22, 24, 26 एवं 28 अगस्त को गांव लोहागल, गोल्याना, तोड़पुरा एवं कोट गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 174 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया़ (नागौर) द्वारा 5, 11, 18, 28 एवं 29 अगस्त को गांव दुजासर, बाकलिया, बाड़ेला, छपारा एवं गुणपालिया गांवों में तथा 16 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 98 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4, 8, 11, 16, 18 एवं 23 अगस्त को गांव अल्हैपुरा, दुबरा, निभि, हैदलपुर, तिघरा एवं मुस्तफाबाद गांवों में तथा 25 अगस्त को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 201 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 10 एवं 11 अगस्त को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर 26 अगस्त को केन्द्र परिसर में तथा 14 एवं 21 अगस्त को गांव चरकड़ा एवं नोखा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 162 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 4, 9, 14, 23 एवं 26 अगस्त को गांव वेरा विलपुर, पालड़ी–आर, खाम्बल, माण्डवा एवं उड़ गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 338 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 5, 8, 11, 16, 18, 23, 26 एवं 29 अगस्त को गांव राजावास, रामपुरा, राजारामपुरा, पुनाना, लोहरवाड़ा, माहर कालन, बिहारीपुरा एवं हाडौता गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 142 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 10, 16, 18, 21, 25 एवं 26 अगस्त को गांव रंगपुर, बलाई की झोपड़ी, भोजपुरा, शोली, भौरा एवं गंगाईचा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 162 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 7, 8, 17, 19 एवं 21 अगस्त को सोनगांव, कुचावटी, बदनगढ़, खेरिया पुरोहितान एवं साहराई गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 99 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 8 एवं 11 अगस्त को ऑनलाईन तथा दिनांक 7, 14 एवं 25 अगस्त को गांव आगोली, माणकलाव तथा जाखड़ो की ढाणी में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 8, 11, 14, 29 एवं 31 अगस्त को साबला, टामटिया, चिखली, भडारिया सलोटा एवं रोजला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 5, 10 एवं 16 अगस्त को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 117 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 21, 26 एवं 28 अगस्त को गांव रामसीन, मन्डोली एवं कोटकासटा गांवों में तथा 5 अगस्त को आयोजित ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 140 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 3, 4, 14 एवं 25 अगस्त को परलिका, लाखनवास, जांसल एवं बेरवालो की ढाणी में एक दिवसीय तथा 8–11 एवं 16–19 अगस्त को केन्द्र परिसर में आयोजित चार दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 157 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं में समय पर टीकाकरण संक्रामक रोगों से बचाता है

पशुओं में संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए टीकाकरण सर्वोत्तम विधि मानी जाती है। टीकाकरण पशुओं में होने वाले रोगों को रोकने, खाद्य उत्पादन की दक्षता बढ़ाने तथा पशुपालकों को पशुजनित और खाद्य जनित संक्रमणों के संचरण को रोकने के लिए प्रभारी तरीका है। टीकाकरण के द्वारा पशुओं के शरीर में कोशिका मध्यस्ता प्रतिरक्षा विकसित होती है जिससे पशुओं को विभिन्न प्रकार के संक्रामक रोगों से सुरक्षा मिलती है। टीकाकरण कार्यक्रम का अनुशासन से अनुपालक पशुओं को स्वस्थ एवम् अधिक उत्पादनशील बनाए रखने में पशुपालकों की मदद करता है।

टीकाकरण के दौरान रखी जाने वाली सावधानियां

- पशुपालकों को चाहिए कि टीकाकरण करवाने से पहले पशुओं को कृमिनाशक औषधियों द्वारा कृमि मुक्त करें।
- टीकाकरण के दो सप्ताह बाद तक टीकाकरण किये हुए पशुओं को रोगी पशुओं के सम्पर्क में ना आने दें।
- किसी भी प्रकार के रोग से ग्रसित, कमजोर तथा वृद्ध पशुओं का टीकाकरण न करें।
- टीकाकरण के दो सप्ताह बाद तक पशुओं को किसी भी प्रकार की दवा देने से परहेज ही रखें।

कुछ प्रमुख पशु रोगों की टीकाकरण समय सारणी

रोग का नाम	पहली खुराक	अगली खुराक
मुंहपका–खुरपका रोग	4 महीने और उससे अधिक उम्र में	छः माह बाद
गलघोंटू	6 महीने और उससे अधिक उम्र में	वार्षिक रूप से
ब्रूसेलोसिस	4–8 महीने की उम्र में (मादा पशुओं में)	जीवन में एक बार
लंगड़ा बुखार	6 महीने और उससे अधिक उम्र में (वर्षा ऋतु से पूर्व)	साल में एक बार
एंथ्रेक्स	4 महीने और उससे अधिक उम्र में	वार्षिक रूप से
भेड़ चेचक (शीप पोक्स)	तीन महीने की उम्र में	वार्षिक रूप से
एन्टेरोटॉक्सीमिया (भेड़–बकरी)	तीन महीने की उम्र होने पर 14 दिन बाद बूस्टर टीका तत्पश्चात गर्मी शुरू होने से पहले	वार्षिक रूप से
पी.पी.आर (भेड़–बकरी)	चार महीने की उम्र में	चार वर्ष के अंतराल पर
थीलेरियोसिस	3 महीने और उससे अधिक उम्र में	जीवन में एक बार

पशुओं में टीकाकरण का महत्व

- टीकाकरण के द्वारा पशु जनित बीमारियें (जूनोटिक बीमारियां) का मनुष्यों से पशुओं में तथा पशुओं से मनुष्यों में संक्रमण को रोका जा सकता है।
- बीमारियों के संचरण की श्रृंखला को तोड़ने के लिए समूह प्रतिरक्षा (Herd immunity) प्रदान करता है।
- मनुष्यों के उपयोग हेतु सुरक्षित एवम् कुशल खाद्य उत्पादन को बढ़ावा मिलता है।
- टीकाकरण संक्रामक रोगों से जुड़े उपचार की लागत को कम करके किसानों पर आर्थिक बोझ को कम करने में मदद करता है तथा पशुओं के स्वास्थ्य की रक्षा करके पशुओं का उत्पादन बढ़ाने में काफी सहयोग करता है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

वैज्ञानिक तरीके से डेयरी फार्मिंग में सफल हुए सुशील कड़वासरा

वैज्ञानिक तरीकों से डेयरी व्यवसाय को अपनी आय का स्त्रोत बनाकर सफल हुए बीकानेर जिले की तहसील लूणकरणसर के गांव फूलदेसर निवासी सुशील कड़वासरा पशुपालकों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत है। सुशील कड़वासरा परम्परागत रूप से खेती एवं पशुपालन से जुड़े हुए थे, लेकिन पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के बाद वैज्ञानिक तरीकों से डेयरी फार्मिंग प्रारम्भ किया तथा इन्होनें दो गाय व एक भैंस से डेयरी व्यवसाय शुरू किया। कड़वासरा लगातार पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के सम्पर्क में रहकर विभिन्न विषयों जैसे कृमिनाशक दवा का उचित उपयोग, संतुलित पशु आहार, पशुओ का वैज्ञानिक प्रबंधन, पशुओं में टीकाकरण का महत्व, पशुओं में बांझपन निवारण, साइलेज एवं है आदि बनाने की विधियों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के वैज्ञानिकों द्वारा इन्होनें गौबर से वर्मी कम्पोस्ट (कैंचुआ खाद) बनाना भी सीखा और स्वंय वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर अपने खेत में उपयोग करके अन्य खाद् की निर्भरता को काफी कम किया। कड़वासरा ने अजोला घास, नैपियर एवं सेवन घास भी लगा रखी है। वर्तमान में इनके पास कुल 38 पशु है जिसमें 27 गाय, 8 भैंस व एक साहीवाल नर पशु सहित दो बछड़े–बछड़ी है, जिनसे वर्तमान में ये लगभग 225 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित करते है। यह दूध के अलावा दुग्ध उत्पाद जैसे घी, मावा एवं पनीर का उत्पादन करके विक्रय करते हैं। वर्तमान में सुशील कड़वासरा पशुपालन से लगभग 1,55,000 रूपये प्रतिमाह आय प्राप्त कर रहे हैं। सुशील कड़वासरा का कहना है कि पशुपालन को वैज्ञानिक तरीके, पशुचिकित्सकों की सलाह एवं पशु वैज्ञानिकों के लगातार सम्पर्क में रहकर पशुओं की उचित देखभाल की जाए तो पशुपालन व्यवसाय में अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। सुशील कड़वासरा की सफलता से आसपास के किसान एवं पशुपालक प्रेरित होकर पशुपालन को अच्छा व्यवसाय के रूप में देखने लगे है। सुशील कड़वासरा अपनी सफलता का श्रेय स्वंय की कड़ी मेहनत एवं पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर के वैज्ञानिकों को देते हैं साथ ही क्षेत्र के अन्य पशुपालकों को भी पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरणसर से जुड़कर उच्च तकनीकी प्रशिक्षण लेकर अपने पशुपालन व्यवसाय को आगे बढ़ाने की सलाह देते है।

सम्पर्क सुशील कड़वासरा
चक 298 आर.डी, फूलदेसर, लूणकरणसर (बीकानेर) मो. नं. 7742232929

पशुओं की प्रजनन क्षमता पर हीट शॉक प्रोटीन की उपयोगिता

पशुधन की प्रजनन प्रक्रियाओं में भी हीट शॉक प्रोटीन (एचएसपी) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते पाए गए है। वे प्रजनन स्वास्थ्य, युग्मक विकास, भ्रूण विकास और समग्र प्रजनन क्षमता के रखरखाव में भी योगदान करते हैं। यहां पशुधन के प्रजनन में एचएसपी की कुछ प्रमुख भूमिकाएं है।

शुक्राणुजनन और अंडकोशिका विकास:

एचएसपी शुक्राणुजनन और अंडकोशिका के विकास और परिपक्वता में शामिल है। वे क्रियात्मक युग्मकों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण प्रोटीनों की उचित तह और संयोजन में सहायता करते हैं। एचएसपी विकासशील शुक्राणुओं और अंडाणुओं को तनाव–प्रेरित क्षति से बचाने में मदद करते हैं जिससे उनकी व्यवहार्यता और प्रजनन क्षमता सुनिश्चित होती है।

तनाव प्रतिक्रिया और प्रजनन क्षमता:

गर्मी तनाव या पोषण संबंधी कमियों जैसे तनाव, पशुधन में प्रजनन क्षमता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। एचएसपी तनाव के जवाब में प्रेरित होते हैं और प्रजनन अंगों और कोशिकाओं पर तनाव के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आणविक संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं। वे प्रोटीन मिसफॉल्डिंग से बचाते हैं। कोशिकीय सामंजस्य को बनाए रखते हैं और ऑक्सीडेटिव क्षति को रोकते हैं, जिससे प्रजनन स्वास्थ्य और कार्य को बढ़ावा मिलता है।

भ्रूण विकास और प्रत्यारोपण:

एचएसपी भ्रूण के विकास और आरोपण प्रक्रियाओं में शामिल है। वे भ्रूणजनन के लिए आवश्यक प्रोटीन के उचित तह और कार्य में सहायता करते हैं। एचएसपी भ्रूण के विकास के दौरान एपोप्टोसिस (क्रमादेशित कोशिका मृत्यु) को विनियमित करने में भी भूमिका निभाते हैं, जिससे भ्रूण का अस्तित्व और उचित विकास सुनिश्चित होता है।

गर्भावस्था और अपरा क्रिया:

स्वस्थ गर्भावस्था और उचित अपरा क्रिया को बनाए रखने के लिए एचएसपी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे प्लेसेंटल विकास और हार्मोन उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण प्रोटीन की उचित फोल्डिंग और परिवहन में सहायता करते हैं। एचएसपी प्लेसेंटज कोशिकाओं को तनाव–प्रेरित क्षति से बचाने में मदद करते हैं, उनकी अखडंता और अनुकूल कार्य सुनिश्चित करते हैं।

शुक्राणु और भ्रूण क्रायोसंरक्षण:

शुक्राणु और भ्रूण का क्रायोसंरक्षण आमतौर पर पशुधन प्रजनन कार्यक्रमों में उपयोग किया जाता है। फ्रीजिंग और थांइग की प्रक्रिया तनाव पैदा कर सकती है और कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकती है। एचएसपी प्रोटीन विकृति को रोकने, झिल्ली की अखडंता को बनाए रखने और ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करके क्रायोप्रिजर्वेशन के दौरान कोशिकाओं की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे थाइंग के बाद शुक्राणु और भ्रूण के अस्तित्व और व्यवहार्यता को बढ़ाते हैं, सहायक प्रजनन तकनीकों की सफलता में सुधार करते हैं।

प्रजनन प्रक्रियाओं में एचएसपी की भागीदारी को समझना प्रजनन रणनीतियों में सुधार, प्रजनन दक्षता का अनुकूलन और पशुधन उत्पादकता बढ़ाने के लिए मूल्यवान है। तनाव को कम करने और एचएसपी कार्य में सुधार लाने के उद्देश्य से रणनीतियां, जैसे कि उपयुक्त पर्यावरणीय परिस्थितियां प्रदान करना, पोषण का प्रबंधन करना और तनाव–प्रतिरोधी आनुवंशिक रेखाओं को विकसित करना, पशुधन उत्पादन में प्रजनन परिणामों को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। तनाव न केवल पशु स्वास्थ और प्रजनन को प्रभावित करता है बल्कि पशुधन प्रणालियों में उत्पादकता और आर्थिक दक्षता को भी कम करता है।

आगामी दृष्टिकोण:

जैसा कि हीट शॉक प्रोटीन के बारे में हमारी समझ गहरी होती जाती है, पशुधन उत्पादन में उनके संभावित अनुप्रयोगों का पूरी तरह से पता लगाने के लिए आगे के शोध की आवश्यकता है। वैज्ञानिक हीट शॉक प्रोटीन का उत्पादन करने की बढ़ी हुई क्षमता वाले पशुओं के प्रजनन के लिए आनुवंशिक चयन के उपयोग की जांच कर रहे हैं, साथ ही एचएसपी उत्पादन को अनुकूलित करने के लिए पोषण सम्बंधी रणनीतियों के विकास की जांच कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त जैव प्रौद्योगिकी में प्रगति विशिष्ट ऊतकों या अंगो को हीट शॉक प्रोटीन के लक्षित वितरण के लिए मार्ग प्रदान कर सकती है, जिससे उनकी सुरक्षात्मक क्षमताओं में ओर सुधार हो सकता है।

निष्कर्ष:

पशुधन पशुओं पर पर्यावरणीय तनाव के हानिकारक प्रभावों का मुकाबला करने में हीट शॉक प्रोटीन शक्तिशाली सहयोगी के रूप में उभर रहे हैं। कोशिकीय कार्य की सुरक्षा करके, प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को बढ़ाकर और प्रजनन क्षमता में सुधार करके, एचएसपी में पशुधन स्वास्थ्य और उत्पादन क्षमता में क्रांति लाने की क्षमता है।

डॉ. अवनि सिंह, डॉ. पवन कुमार मित्तल,
डॉ. गोविन्द सहाय गौतम, डॉ. बरखा गुप्ता,
पीजीआईवीईआर, जयपुर

पशु चारा सामग्री का प्रभावी भंडारण कैसे करें

पशुधन मालिकों के लिए, चारा सामग्री का उचित भंडारण सिर्फ एक नियमित कार्य से कहीं अधिक है, यह आपके जानवरों के स्वास्थ्य और उत्पादकता को बनाए रखने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। गुणवत्तापूर्ण फीड इष्टतम विकास, प्रजनन और समग्र कल्याण सुनिश्चित करता है। चाहे आप मवेशी, मुर्गीपालन, सूअर, या अन्य पशुधन पालें, चारा सामग्री भंडारण के सिद्धांतों को समझना आवश्यक है। फीड सामग्री को प्रभावी ढंग से संग्रहीत करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाने चाहिए।

सही भंडारण स्थान का चयन करना:

उचित फीड सामग्री भंडारण में पहला कदम सही स्थान चुनना है। एक आदर्श भंडारण क्षेत्र ठंडा, सूखा, अच्छी तरह हवादार और सीधी धूप से सुरक्षित होना चाहिए। यह फफूंद, बैक्टीरिया और कीड़ों की वृद्धि को रोकने में मदद करता है जो फीड की गुणवत्ता से समझौता कर सकते हैं।

उचित भंडारण कंटेनरों का उपयोग करें:

उपयुक्त भंडारण कंटेनरों से फीड गुणवत्ता बनाए रखने में महत्वपूर्ण अंतर आ सकता है। वायुरोधी कंटेनर, सुरक्षित ढक्कन वाले डिब्बे और धातु या प्लास्टिक के ड्रम उत्कृष्ट विकल्प हैं। ये कंटेनर नमी, कीटों और दूषित पदार्थों को दूर रखने में मदद करते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि फीड सामग्री का पोषण मूल्य बरकरार रहता है।

कीट प्रबंधन:

संग्रहीत चारा सामग्री पर कीट कहर बरपा सकते हैं, जिससे प्रदूषण और पोषक तत्वों की हानि हो सकती है। एक व्यापक कीट प्रबंधन रणनीति लागू करें जिसमें नियमित निरीक्षण, उचित सफाई प्रक्रियाएं और कीट–प्रतिरोधी कंटेनरों का उपयोग शामिल है। संक्रमण के लक्षणों, जैसे चबाने के निशान, मल, या असामान्य गंध पर नजर रखें।

रोटेशन: पहले अंदर, पहले बाहर:

"फस्ट इन, फस्ट आउट" रोटेशन रणनीति को लागू करने से यह सुनिश्चित होता है कि पुराने फीड का उपयोग नए बैचों से पहले किया जाता है। यह अभ्यास समय के साथ फीड के बासी होने या उसके पोषण मूल्य खोने के जोखिम को कम करता है। उचित रोटेशन की सुविधा के लिए फीड कंटेनरों को खरीद की तारीख के साथ लेबल करें।

तापमान एवं आर्द्रता नियंत्रण:

फीड सामग्री तापमान और आर्द्रता में उतार–चढ़ाव के प्रति संवेदनशील होती है। उच्च तापमान और नमी से फफूंद की वृद्धि और पोषक तत्वों का क्षरण हो सकता है। अपने भंडारण क्षेत्र में तापमान और आर्द्रता निगरानी प्रणाली स्थापित करें और स्थिर स्थिति बनाए रखने के लिए पंखे या एयर कंडीशनिंग का उपयोग करें।

स्वच्छता एवं सफाई:

स्वच्छ भंडारण वातावरण बनाए रखना महत्वपूर्ण है। धूल, मलबे और संभावित संदूषकों को जमा होने से रोकने के लिए भंडारण कंटेनरों, अलमारियों और फर्शों को नियमित रूप से साफ करें। यह सुनिश्चित करने के लिए स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें ताकि चारा बेदाग और हानिकारक रोगजनकों से मुक्त रहे।

लेबलिंग और रिकॉर्ड–कीपिंग:

मिश्रण–अप से बचने और उचित फीड प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए फीड कंटेनरों की सटीक लेबलिंग आवश्यक है। फीड प्रकार, खरीद तिथि, समाप्ति तिथि और निर्माता विवरण जैसी जानकारी शामिल करें। अपनी फीड इन्वेंट्री का विस्तृत रिकॉर्ड रखने से आपको उपयोग पैटर्न की निगरानी करने और भविष्य की खरीदारी की प्रभावी ढंग से योजना बनाने में मदद मिलती है।

क्रॉस–संदूषण को रोकें:

यदि विभिन्न प्रकार की फीड सामग्री एक–दूसरे के संपर्क में आती हैं तो क्रॉस–संदूषण हो सकता है। इससे आपके पशुधन में अनपेक्षित पोषक तत्व असंतुलन या स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो सकती हैं। इन्हें रोकने के लिए हमेशा अलग–अलग जानवरों के लिए भोजन अलग–अलग संग्रहित करें।

निष्कर्ष:

चारा सामग्री का उचित भंडारण सफल पशुधन प्रबंधन की आधारशिला है। सही प्रथाओं को लागू करके, आप चारे की गुणवत्ता और पोषण मूल्य को संरक्षित कर सकते हैं, जिससे अंततः आपके जानवरों के स्वास्थ्य और उत्पादकता को लाभ होगा। सही भंडारण स्थान चुनने से लेकर अच्छी स्वच्छता अपनाने तक, प्रत्येक कदम आपके पशुधन के लिए एक सुरक्षित और पौष्टिक आहार व्यवस्था बनाने में योगदान देता है।

डॉ. महेन्द्र सिंह मील
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, नवानिया, उदयपुर

निदेशक की कलम से...

दुधारू पशु खरीदते समय पशुपालक रखें निम्न बातों का ध्यान

पशुपालन किसानों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने का अच्छा विकल्प है। पशुधन क्षेत्र विकसित होती जनसंख्या के आहार और पोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पशुधन पशुपालक की आमदनी में सहायक तो है ही साथ ही कृषि विकास को समग्र रूप से बढ़ावा भी देता है। पशुपालन एक ऐसा व्यवसाय है, जिसे भूमिहीन किसान भी कर सकते हैं। वैज्ञानिक पशुपालन में पशु नस्ल का चयन बहुत ही महत्वपूर्ण है। दुधारू पशु का चयन कोई सरल कार्य नहीं है। दुधारू गाय–भैंस खरीदते समय नस्ल के अनुसार उसके बाह्य आकार व वंशावली, दूध देने की क्षमता पर अधिक ध्यान देना चाहिए तथा दुधारू पशु का चयन और खरीदते समय अच्छी नस्ल दोष रहित पूर्णतः स्वस्थ पशु, लम्बे ब्यांत, हर साल बच्चा और अधिक दूध देने वाले पशु को प्राथमिकता देनी चाहिए। पशुपालन व्यवसाय से पूर्व किसानों एवं पशुपालकों को पशु खरीदने से पहले दुधारू पशु की पहचान हेतु कई बातों का ध्यान रखना चाहिए, जैसे तिकोने आकार की गाय अधिक दूध देती है। गाय का अगला हिस्सा पतला तथा पिछला हिस्सा चौड़ा दिखाई देना चाहिए। पशु की चमड़ी चिकनी, पतली तथा चमकदार होनी चाहिए। अयन पूर्ण विकसित व बड़ा होना चाहिए। थनों व अयन पर पाई जाने वाली दुग्ध शिराएं उभरी हुई तथा टेढ़ी–मेढ़ी होनी चाहिए। चारों थनों का आकार समान व आपसी दूरी भी समान होनी चाहिए। दुधारू पशु खरीदते समय हमेशा दूसरे व तीसरे ब्यांत वाले पशु को प्राथमिकता देनी चाहिए। पशु खरीदते समय यह भी प्रयास होना चाहिए कि पशु एक दो माह की ब्याही हुई हो तथा उसके नीचे मादा बच्चा हो क्योंकि मादा बच्चा भविष्य की पूंजी है। पशु खरीदते समय दो– तीन बार दुग्ध दोहन अपने सामने अवश्य करवाकर देखना चाहिए। दुधारू पशु का चयन करते समय उसकी आयु का भी पता लगाना आवश्यक होता है। आयु का सही पता उसके दांतों से लगाया जा सकता है। मुंह के निचली पंक्ति में स्थाई दांतों के चार जोड़े होते हैं जो अलग–अलग समय पर निकलते हैं। इस प्रकार दांतों को देखकर पशु की अनुमानित आयु का पता लगाया जा सकता है। इसी प्रकार भैंस के सींगों में बने छल्लों को देखकर भी आयु का पता लगाया जा सकता है। सींग पर उपस्थित छल्लों की संख्या में दो जोड़कर भैंस की आयु का अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार गाय/भैंस की खरीद करते समय अयन व थनों की बारीकी से जांच कर लेनी चाहिए यदि थन में गांठ अथवा सूजन आदि के लक्षण हो तो ऐसे पशुओं को नहीं खरीदना चाहिए। अतः पशुपालक भाई नये पशु खरीदते समय उपरोक्त बातों का ध्यान रखकर आर्थिक हानि से बच सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी
केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी
प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/
विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट   भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया